राजीविका

समूह से समृद्धि तक

राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद्

ग्रामीण एसएचजी परिवारों के लिए आर्थिक संबल और आजीविका सृजन

ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले निर्धन परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना राजीविका का प्रमुख लक्ष्य है। इस लक्ष्य को सफल बनाने हेतु नित–नए अनूठे प्रयास किये जा रहे हैं, जो व्यवहारिक दृष्टि से भी आजीविका संवर्धन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ हैं। ग्रामीण स्त्रियों में कौशल विकास कर उन्हें कृषि, पशुपालन और हस्तकला से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है साथ ही उन्हें उनके स्वयं के व्यवसाय शुरू करने के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। व्यवसाय की शुरुआत के लिए एसएचजी और बैंकों द्वारा ऋण की उपलब्धता प्रदान की जा रही है। इन सभी प्रयासों का सकारात्मक परिणाम ग्रामीण महिलाओं एवं उनके परिवारों के जीवन स्तर और आर्थिक मजबूती के रूप में आज हमारे सामने हैं, जो हमें निरंतर बेहतर प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

महिला सशक्तिकरण की ओर एक अनूठा कदम

ब्लाक खैरवाड़ा के श्रीराम सीएलएफ, छाणी में कुल 13 ग्राम पंचायते हैं, जिनमें से 9 पंचायतें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। गर्व की बात यह है कि इनमें से सभी 9 स्थानों पर हमारे राजीविका समूह की महिलाएं सरपंच निर्वाचित हुई हैं।

पोल्ट्री विलेज प्रोग्राम (PVP)

NRLM, **MKSP** एवं **NRTEP** परियोजना के अंतर्गत राजीविका स्वयं सहायता समूहों के एक लाख परिवारों के लिए पोल्ट्री इंटरवेंशन के द्वारा आजीविका सृजन का वार्षिक लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस परियोजना के तहत प्रत्येक परिवार एसएचजी से ऋण लेकर 50 चूजे खरीद सकेगा। परियोजना फंड से किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं प्रदान किया जाएगा। हर जिले में एक मुर्गीपालन केंद्र भी खोला जाएगा। इस परियोजना से लाभ लेने वाले सभी परिवारों के साथ मुर्गीपालन और अजोला के विषय में जानकारी भी साझा की जाएगी।

मुर्गीपालन

राजीविका द्वारा पशुधन आजीविका के अंतर्गत मुर्गीपालन की गतिविधि को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए पहले विभिन्न स्थानों पर संचालित पोल्ट्री फार्मों से इस विषय में जानकारी हासिल की गई तथा समीपवर्ती गुजरात के दांहोद शहर से 15 दिन की उम्र के कड़कनाथ नस्ल के चूजे मंगवा कर स्वयं सहायता समूहों के 29 लाभार्थी परिवारों को कुल 1300 चूजों और उन्हें खिलाने हेतु प्रति लाभांर्थी 20 किग्रा राशन सामग्री का वितरण किया गया है। इस गतिविधि से हर महिला को 4 माह बाद 30 हजार से अधिक का लांभ होगा। जन्म के 120 दिनों के बाद यह नस्ल अंडे देना प्रारम्भ कर देती हैं, जो बाजार में प्रति अंडा 30 से 40 रुपए में बिकतां है। साथ ही कड़कनाथ नस्ल का मुर्गा अन्य की तुलना में दोगुनी कीमत पर बिकता है।

महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के तहत सरदारशहर ब्लॉक के साडासर क्लस्टर के राणासर पंवरान गाँव में पाठशाला सदस्यों द्वारा चूरू जिले में सर्वप्रथम देसी नस्ल (कड़कनाथ) की मुर्गियों का पालन प्रारम्भ किया गया।

डेयरी वैल्यू चेन

राजीविका ने NRETP के अंतर्गत NDDB डेयरी सर्विसेज के साथ डेयरी वैल्यू चेन के विकास के लिए एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। यह परियोजना राजस्थान के तीन जिलों क्रमशः कोटा, बारां और झालावाड़ के 800 गाँवों के 40 हजार परिवारों के लिए हैं, जिसका बजट 41. 89 करोड़ रुपए है।

बीकानेर में मेगा क्रेडिट कैंप का आयोजन

भारतीय स्टेट बैंक द्वारा राजीविका विभाग के स्वयं सहायता समूहों को ऋण वितरण के लिए बीकानेर में एक मेगा क्रेडिट कैंप का आयोजन किया गया। इस विशाल ऋण वितरण शिविर में 180 स्वयं सहायता समूहों को दो करोड़ 70 लाख रुपए की राशि वितरित की गई। इस आयोजन से कुल 2150 महिलाएं लाभान्वित हुई। राजीविका द्वारा बीकानेर जिले में अब तक 4105 स्वयं सहायता समूह गठित किए गए हैं और आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़ी हुई महिलाओं को अनुदान और आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाने के लिए कार्य किए जा रहे हैं।

रोजगार सृजन और सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हो रही हैं ग्रामीण महिलाएं

राजीविका की एसएचजी महिलाएं केंद्र सरकार की योजनाओं को आमजन तक पहुंचने के साथ ही खुद के लिए भी रोजगार सृजित कर रही हैं । राजीविका समूह की सीएलएफ मैनेजर गाँव –गाँव और ढाणी –ढाणी जा कर लोगों को जागरूक कर रहीं हैं। इसी के सकारात्मक परिणाम स्वरुप ग्रामीण अंचल के 40 हजार लोगों के बीमा कराये गए हैं। राजीविका समूह की महिलाओं ने अकेले ही 16 हजार से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना से जोड़कर बीमित किया है। बीमा कराने के एवज में महिलाओं को प्रोत्साहन राशि दी जा रही है जिससे उन्हें आजीविका का बड़ा साधन भी उपलब्ध हो रहा है।

महाराष्ट्र सरस मेले में राजस्थान की महिलाओं ने रोशन किया प्रदेश का नाम

प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न हिस्सों में सरस मेलों का आयोजन किया जाता है । ये मेले एसएचजी महिलाओं को उनके बनाए उत्पाद को बेचकर आय अर्जित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस वर्ष महाराष्ट्र में आयोजित सरस मेले में राजस्थान के चूरू जिले की टीम ने बहुत उत्तम प्रदर्शन किया और कुल 52000 मूल्य के साबुन की बिक्री कर आय अर्जित की है जो प्रशंनीय है।

सफलता की कहानी

संगठन से जुड़ जीवन को दी नई दिशा

तलाव गाँव की विष्णु योगी का जीवन आर्थिक तंगी में गुजरा रहा था। जब विष्णु योगी के गाँव में राजीविका परियोजना नहीं थी तो उनके पास ना तो रोजगार का कोई साधन था और ना ही कोई आय। उनका परिवार खेती व पशुपालन की सही जानकारी के अभाव में अशांति व आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। गाँव में जब राजीविका टीम आई और स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी दी, तो उन्हें समूह में जुड़ने की प्रेरणा मिली। वे जय बजरंग बली समूह की सदस्य बन गई। सरकार के आजीविका मिशन से उन्हें समय –समय पर सही जानकारी मिलने लगी जिससे कम खर्च में अच्छी उपज व ज्यादा मुनाफा प्राप्त होने लगा और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आना शुरू हो गया। राजीविका के सहयोग से अब वे घर पर ही जैविक कीटनाशक व जैविक खाद बना कर कृषि में उपयोग करने लगी हैं जिससे कम खर्च में अधिक पैदावार व जैविक खेती प्राप्त होने लगी है। इस प्रकार राजीविका से जुड़ने के बाद उन्हें 9100 रु प्रति माह व खेती से 41500 रु की वार्षिक बचत होने लगी है।

सफलता की कहानी

रूढ़ियों को तोड़, बदला अपना जीवन

भीलवाड़ा जिले के सहाड़ा गाँव की अनीशा पठान के जीवन में कई समस्याएँ थी, पर उन्होंने हार नहीं मानी। राजीविका एसएचजी से जुड़कर आज उन्होंने अपने एवं अपने परिवार के लिए आर्थिक सशक्तिकरण की नींव रखी है। पिछले 3 वर्षों से सक्रिय एसएचजी सदस्य और वीओ आरजीबी सदस्य के रूप में काम कर रही हैं।

बाद में, उन्होंने पशू सखी के रूप में काम करना शुरू कर दिया। व्यवसाय से अर्जित धन सहायता से उन्होंने अपने बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और पति को मदद की। वह एक सक्रिय आरजीबी सदस्य के रूप में हमेशा अन्य एसएचजी सदस्यों को समय पर पुनर्भुगतान और इंटर लोनिंग के लिए प्रोत्साहित करती है। एसएचजी से जुड़ने के बाद उनके जीवन में बड़ा ही सकारात्मक परिवर्तन आया है और उन्होंने कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उन्होंने 6 अजोला गड्ढे विकसित किए हैं, पीओपी के तहत 20 परिवारों को कवर किया, 100: टीकाकरण, 5 जानवरों का बधियाकरण, पशुपालन विभाग के साथ संपर्क और कम लागत पर चारा प्राप्त करने में मदद की है। एक रूढ़िवादी परिवार से होने के बावजूद, अनीशा पठान ने अपनी पहचान बनाने के लिए सभी रूढ़ियों को तोड़ दिया। आज वे अन्य महिलाओं के लिए उदाहरण बनकर उभरी हैं।

उपलब्धियाँ

- क्रियान्वित हुए ब्लॉक्स की संख्या – 272
- क्रियान्वित हुए गाँवों संख्या– 20156
- एसएचजी का गठन –162183
- होउसहोल्ड्स की संख्या – 18.77 लाख
- एसएचजी जिनके बैंक बचत खाते हैं – 127504
- एसएचजी जिन्होंने रिवॉल्विंग फंड्स लाभ उठाया – 112703
- एसएचजी जिन्होंने सीआईएफ का लाभ उठाया – 77872
- एसएचजी जिन्होंने प्रथम बार सीआईएफ क्रेडिट लिंकेज का लाभ उठाया – 61932
- एसएचजी जिन्होंने दोबारा सीआईएफ क्रेडिट लिंकेज का लाभ उठाया – 27687
- क्रेडिट वॉल्यूम – 628.56 करोड़
- वीओ की संख्या – 11777
- सीएलएफ की संख्या – 410
- कुल खर्च – 1582.08 करोड़